शोध मंथन Vol. XI No.IV Oct.-Dec. 2020 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 7.760 (SJIF)

नारी की प्रजनन सम्बन्धी समस्याएंः चित्रा मुद्गल के उपन्यासों के विशेष सन्दर्भ में

अमित जैन
हिन्दी विभाग,
दिगम्बर जैन कालिज, बड़ौत
ईमेलः ppgamit@gmail.com

सारांश

मानव समाज की उन्नति नारी की उन्नति पर स्थित है। यही कारण रहा कि भारत में किसी भी युग में किसी समाज ने उत्कर्श प्राप्ति में नारियों के सम्मान की अवहेलना का कोई भाव प्रदर्शित नहीं किया और न असभ्यावस्था में ही नारियों की उपयोगिता किसी रूप में कम की जा सकी। परन्तु वर्तमान समाज में भौतिकता की चकाचौंध में अन्धी हुई दुनिया ने कन्या शिशु से उसका पैदा होने का अधिकार ही छीन लिया है। वैज्ञानिक रूप से तरक्की कर आधुनिक नर पिषाचों ने कन्या को पैदा होने से पहले उदर में ही मारना प्रारम्भ कर दिया है। आधुनिक नारियों की अव्यवस्थित जीवनशैली ने प्रजजन को नैसर्गिक से ओपरेशन थियटर तक पहुॅचाया है। खेतों में डलते कीटनाशकों एवं अव्यवस्थित जीवनशैली ने आधुनिक स्त्रीयों में बांझपन की सम्सयाओं को विस्तार दिया है। आज बहुत अधिक मात्रा में स्त्रीयां बांझपन की सम्सया से ग्रसित होकर आधुनिक वैज्ञानिक उपायों का सहारा लेने के बाध्य हो रही है।

प्रस्तावना

आधुनिक समाज को यह समझना होगा कि जबतक हम स्त्रीयों को जन्म नही लेने देगें तब तक समाज में बिगडते लिंगानुपात को व्यवस्थित नही किया जा सकता।

सृष्टि में सुपीत कृष्ण भृंग और स्वंयम्भू (ब्रह्मा) तथा उनकी मानस सन्तति के अतिरिक्त ऐसा अन्य कोई भी जीव–जन्तु या प्राणी प्रतीत नहीं होता जो नारी के सहयोग के बिना या केवल नर से उत्पन्न हुआ हो। इसलिए नारी को 'नर की खान' कहा गया है। मानव जगत का प्रायः आधा भाग नारी जाति का है।[1]

मानव जाति के निर्माण एवं विकास में नारी के अक्षुण्ण महत्त्व को तार्किक रूप से प्रतिपादित करता लता जी का उक्त कथन नारी के मातृत्व स्वरूप को मानवता के शिखर पर स्थापित करता है। मानव समाज की उन्नति नारी की उन्नति पर स्थित है। यही कारण रहा कि भारत में किसी भी युग में किसी समाज ने उत्कर्ष प्राप्ति में नारियों के सम्मान की

अवहेलना का कोई भाव प्रदर्शित नहीं किया और न असभ्यावस्था में ही नारियों की उपयोगिता किसी रूप में कम की जा सकी। स्थान–स्थान पर हम नारी को दिव्य पद पर प्रतिष्ठित पाते हैं।

नारी को यह दिव्य पद मातृत्व सुख प्राप्त करने के सुमंगल अवसर पर मिलता है। भारतीय समाज में माता का अपना विशिष्ट स्थान रहा है। वेदो में भी माता को अत्यन्त सम्माननीय पद प्रदान किया गया है। ऋग्वेद में तो माता को सबसे घनिष्ठ एवं प्रिय सम्बन्धी बताया गया है।[2] नारी को इसी कारण प्रत्येक स्थल पर प्रथम अधिकार दिया गया है। पुरुष को द्वितीय पद प्राप्त है। माता–पिता का समास करने पर पहला पद माता को ही दिया गया है। ऋग्वेद के अनुसार परमात्मा भी माँ रूप ही है–

त्वं हि नः पितावसो त्वं माता शतकृतो बभूविथ।[3]

आधुनिक काल में नारी को माता बनने में अनेक समस्यायें आने लगी हैं। आधुनिक जीवन शैली ने काफी हद तक नारी को मातृत्व सुख से वंचित होने के लिए बाध्य कर दिया है। चित्रा मुद्‌गल जी ने अपने उपन्यासों में नारी प्रजनन से सम्बन्धित समस्याओं का अनेक स्थलों पर उद्‌घाटन किया है। उन्होंने जो समस्यायें अपने उपन्यासों में रेखांकित की है, वे मात्र कल्पना पर आधारित न होकर आधुनिक नारी समाज की वास्तविक समस्यायें ही हैं। इन समस्याओं का इस अध्याय के अन्तर्गत हम तीन आधारों पर अध्ययन करेंगे–

क) कन्या भ्रूण हत्या

आर्यजन कन्याओं का अत्यन्त सम्मान करते थे। वे कन्या को पुत्र के समान ही स्नेह करते थे। कन्या का पालन–पोषण वैदिक काल में अत्यन्त स्नेह के साथ किया जाता था। कमनीय कन्या की प्राप्ति के लिए 'पूषा देवता' से प्रार्थना तक की जाती थी। कन्या का जन्म माता व पिता दोनों के लिए हर्ष का विषय था। ऋग्वेद में एक स्थान पर कहा गया है कि–

"पुत्र से पिता को जो आनन्द मिलता है वही पुत्री से माता को, बल्कि उससे भी अधिक।"[4]

इससे पुत्री की स्थिति का स्पष्ट आभास मिलता है। कन्या जन्म कितना सराहनीय था। इसका वर्णन ऋग्वेद की इस उक्ति में मिलता है–

वह पुरुष धन्य है जिसकी कई पुत्रियाँ हो।[5]

महर्षि बाल्मीकि तो कन्या की प्राप्ति जन सामान्य के लिए दुर्लभ बताते हैं। वे उसे कन्या के लिए तपस्या करने का उपदेश तक देते हैं–

कन्या की प्राप्ति लम्बी तपस्या से होती है।[6]

धीरे–धीरे समय परिवर्तन के साथ मति–परिवर्तन भी होता चला गया और कन्या दुर्लभ से दुहिता हो गई। कन्या भाग्य से भार स्वरूपा हो गई। प्रियदर्शिनी, हतभाग्या हो गई–

सा हि यत्रैव दीयते, तत्रैव दुर्हिता भवति।[7]

अर्थात जहाँ भी वह दी जाती है, वही उसका स्वागत नहीं होता।

पुरुष सत्ता–मातृ सत्ता पर हावी होती चली गई। मानव मन संकीर्णताओं से घिरता चला गया। कन्या बंधन का प्रतीक बन गई और पुत्र मोक्ष का द्वार माना जाने लगा। धार्मिक दृष्टि से वंश चलाने तथा युद्धों में यौद्धाओं की आवश्यकता होने से पुत्री की अपेक्षा पुत्र की कामना अधिक की जाने लगी। लता सिंह के शब्दों में–

विवाह के पश्चात् उसके सुख–दुःख तथा दहेज सम्बन्धी चिंताएं भी माता–पिता के वात्सलय को सदा सशंकित किये रहती थी। कालस्वरूप वे कन्या की उत्पत्ति से बचने का प्रयत्न करते थे।[8]

कन्या का आना विपत्ति समझना व माना जाने लगा। इसलिए कन्या प्राप्ति की कामना समाप्त होने लगी। ऐतरेय ब्राह्मण में तो कन्या को दुःखों की निधि ही कहा गया है–

कृपण हि दुहिता ज्योतिर्हि पुत्रः।[9]

समाज में पुत्र प्राप्ति के लिए उपाय किए जाने लगे। कन्या निषेध व पुत्र की इच्छा से धार्मिक कृत्य भी किए जाने लगे।

क्या महत्व है भगवा वस्त्रों का, क्या है मृगचर्म का, क्या है दाढ़ी और बालों में, क्या है तप में? हे ब्राह्मण! पुत्र की इच्छा करो। वह निश्चय ही अनिन्दनीय लोक सुख का साधन है।[10]

पुत्र मुक्ति की प्राप्ति के लिए नौका हो गया और पुत्री एक विपत्ति। परन्तु हम एक बात भूल गए कि मानव जाति के अस्तित्व के लिए कन्या का जन्म अनिवार्य है।

अगर पुरुष की सोच यही तक भी रहती तो भी शायद उसका अपराध क्षम्य मान लिया जाता। परन्तु उसने एक पिता के रूप में स्वयं अपनी संतति का भक्षण शुरु कर दिया। जिसने उसे पशु से भी गिरा–गुजरा बना दिया। सर्पिणी भी अपने बच्चे को जन्म देने के बाद खाती है परन्तु मनुष्य ने कन्या भ्रूण को जन्म लेने तक का अधिकार भी नहीं दिया। जिसके प्रमाण हमें गौतम धर्म सूत्र में भी मिलते हैं–

भ्रूणहनि हीनवर्ण सेवायां च स्त्री पतति।[11]

मानव जाति के पतन का यह सिलसिला दिनों दिन बढ़ता चला गया और आज के युग में यह अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया।

मानव के दानव होने की इस करतूत ने एक कवि हृदय को झकझोर दिया। वह पुकार उठा–

मानव ने मानवता छोड़ी,
मानव मानव न बन पाया।
विज्ञान के इस युग में,
मानव ने मानव को खाया।।

भ्रूण हत्या की इस विडम्बना को चित्रा जी ने प्रमुखता से तो नहीं उठाया है परन्तु इस समस्या की ओर इशारा अवश्य किया है। गिलिगडु में अनुश्री को किसी और ने नहीं अपितु उसके गुरु, जिन्हें वो सबसे अधिक मान देती है, वे ही अनुश्री को कन्या भ्रूण हत्या के लिए बाध्य करते हैं।

अप्पू नहीं जानते, वह बताना भी नहीं चाहता था कि कात्यायिनी कुमुदनी का भ्रूण धारण करने पर गुरु पिल्लई ने अनुश्री को भ्रूण हत्या के लिए कितना बाध्य किया था, धिक्कारा था।[12]

परन्तु अनुश्री एक सहृदया स्त्री थी। उसने पुरुष की इस जबरई के लिए साहस के साथ मना कर दिया–

उसने साफ कह दिया था। जिस रोज वह भ्रूण गिरवाने जाएगी, घर लौटकर कमरे में उसकी लाश लटकी पाएगी।[13]

सभी स्त्रियां इतना साहस नहीं कर पाती है। आवां की नमिता स्वयं अस्पताल जाकर अपने पेट में पल रहे अपने ही अंश की हत्या के लिए डाक्टर के सामने प्रार्थना करती है–

डाक्टर के बहुत पूछने और साहस बांधने पर उसने बताया, वह कुंआरी है और बच्चा नहीं चाहती। गर्भ की सफाई नहीं हो सकती।[14]

स्मिता की बड़ी बहन भी अस्पताल जाकर अपना गर्भ गिरवाती है। स्मिता स्वयं यह रहस्य नमिता को बताती है–

दीदी के पेट की सफाई करवाने आई स्वयं उसे नर्सिंग होम लेकर गई थी....[15]

गर्भपात के कई केसों में स्त्रियां अपनी मजबूरी की दुहाई देती है। उनकी दलील होती है कि उनके पास कोई चारा नहीं था। परन्तु क्या इतने मात्र से वे अपने इस अधम पाप से मुक्त हो सकती हैं। इंडिया टुडे के वार्षिक सर्वे में गर्भपात की जो भयवाह तस्वीर उभरकर आई है; क्या वह एक माता की प्रतिष्ठा को धूमिल करने के लिए पर्याप्त नहीं? सर्वे के अनुसार देश की 39 प्रतिशत महिलाओं ने अनचाहा गर्भ ठहरने पर गर्भपात को स्वीकार किया।[16] क्या इनके लिए देह यौन तृप्ति का साधन मात्र नहीं? स्वयं चित्रा जी ने डा0 वनजा से इस प्रश्न को जोर देकर उठाया है–

"ऊब गई हूँ मैं लड़कियों की इन नादानियों से। ऐसे पैसों की जरूरत नहीं इस नर्सिंग होम को। सौ में से प्रत्येक पांच लड़की स्वतन्त्र यौन–संबंधो में अपना वजूद तलाश रही। समता तलाश रही। तलाश लिया? पा लिया? चली आती है कहानियां लेकर कंडोम इस्तेमाल कर रही थी, एक दिन की लापरवाही में फंस गई डाक्टर साहब।

कितनी बार मौज–मजे में हुई लापरवाही में गर्भ गिरवाओगी। क्या समझते हो तुम लोग डाक्टर को ... जल्लाद ... हत्यारा .. कुटनी ...[17]

कन्या भ्रूण हत्या एक अनिवार्य सामाजिक अभिशाप बन चुका है। आज इसके परिणाम भी हमारे समक्ष अपनी भयावहता के साथ आने लगे है। भारत की जनगणना 2001

के अनुसार आज भारत में लड़कों की तुलना में लड़कियों का औसत अनुपात खतरनाक ढंग से नीचे गिर रहा है और इससे भारत में स्त्रियों के साथ शोषण अत्याचार जैसे मामले बढ़े हैं। औसत रूप से देखा जाए तो भारत में आज प्रत्येक एक हजार पुरुषों पर मात्र 933 महिलाएं हैं। हरियाणा, राजस्थान, बिहार, झारखण्ड और पंजाब में अनुपात और भी नीचे हैं।[18] गौतमी इस समस्या के कारण पर टिप्पणी करती है—

गर्भस्य शिशु के लिंग की पहचान की तकनीक का विकास तथा मात्र व्यवसायिक लाभ के उद्देश्य से संचालित तथा नैतिक मूल्यों से किनारा करते चिकित्सकीय व्यवसाय द्वारा इस तकनीक का उपयोग कन्या शिशु के भ्रुण की हत्या के लिए किये जाने से भी देश में जन्म के समय कन्या शिशुओं की संख्या कम हो रही है।[19]

इस स्थिति की भयावहता को देखते हुए भारत सरकार ने भ्रूण परीक्षण पर पाबंदी लगा रखी है परन्तु कानूनी पाबंदी के बावजूद यह गुप्त रूप से किए जाते हैं और छोटे कस्बों तथा गाँवों में कन्या भ्रूण हत्या जैसे सामान्य दिनचर्या का अंग बन चुकी है। कुछ भारतीय समुदाय नवजात कन्या शिशु की हत्या के लिए दूध में डुबोकर अथवा अफीम खिलाकर मार डालने के लिए कुख्यात हैं। भारत के कुछ भागों में (जैसा कि आंकड़े गवाही देते हैं) लिंग अनुपात प्रति एक हजार पुरुषों पर 870 महिलाओं तक गिर चुका है। इस समस्या को अपने साहित्य में विषय ना बनाने वाली लेखिकाओं को सुधा अरोड़ा जी स्पष्ट शब्दों में कहती हैं—

बलात्कार और भ्रूण हत्याएं पहले से कई गुणा बढ़ गई हैं। .. पर वह स्त्री की देह मुक्ति के पैरोकारों का मुद्दा नहीं है।[20]

परिवारों में कन्या भ्रूण हत्या का एक बड़ा कारण दहेज है। लड़कों की शादी में वर पक्ष की ओर से दहेज की भारी भरकम मांग और दिये जाने वाले उपहारों के बोझ की वजह से आज की ग्रामीण और कस्बाई भारत में लड़कियों को बोझ माना जाता है। यहाँ तक कि उन्हें जान से मार दिया जाता है। किसी कवि ने ठीक ही कहा है—

"अर्थी चढ़ी हजारों कन्या, बैठ न पायी डोली में।
लाखों घर बरबाद हुये, इस दहेज की होली में।।"

बेटी की शिक्षा भी फालतू का खर्च समझी जाती है। सबसे बुरा दृष्टिकोण तो यह है कि यदि बेटी बड़ी होकर कठोर सामाजिक रूढ़ियों को तोड़कर अपना रास्ता चुनने की कोशिश करती है तो यह माना जाता है कि उसने परिवार की इज्जत पर कालिख पोत दी है और उसे 'ऑनर किलिंग' की भेंट चढ़ा दिया जाता है। कन्या भ्रूण हत्या के पीछे की यह सर्वव्यापी मान्यता है। प्रसिद्ध लेखिका डॉ0 बी0 सुधा स्त्री के इस दर्द को भली—भाँति समझकर व्यक्त करती हैं—

भारतीय समाज में स्त्री होना एक कलंक है। पुत्री जब धरती में पहला प्रकाश देखती है, तब से उसे अपमान, उपेक्षा, अवमानना का जहर दिया जाता है। ... माँ के गर्भ से ही स्त्री को अस्वीकृति मिलती है। नाभि टटोलकर, चेहरा निरखकर, खट्टा या मीठा

पूछकर उल्टियाँ जल्दी शुरु हुई या देर से आदि जांच परखकर परिवार की और समाज की बड़ी बूढ़ी औरतें यह ऐलान कर देती है कि वह बेटे की माँ बनेगी या बेटी की ... बेटी पैदा होती है। ठंडी उच्छ्वासों के बीच पहली रूलाई सुनकर मन की आवाज गूँज उठती है– बेटी आ गई? अपमान का यह पहला पड़ाव ... हमारे समाज में जितनी भी समस्याएं है सब प्रायः सामाजिक क्षेत्र से ही पनपती है और वे कहीं न कहीं स्त्री से जुड़ी हुई भी होती हैं।[21] चित्रा जी स्वयं नारी की इस उपेक्षा को भली–भाँति समझती है वे उपन्यास 'आवां' में एक स्थल पर लिखती हैं–

लड़की के लिए इस देश में हफ्ते भर बाद कोई नहीं रोता।[22]

लड़कियों के इस दुर्भाग्य पर हमारा संवेदनशील समाज मौन कैसे रह जाता है? क्या लड़कियों को भी लड़कों की तरह जीने का अधिकार नहीं है? एक कवि हृदय प्रश्न करता है–

बेटियां गुलजार होती हैं
बेटियां बस प्यार होती हैं ।
बेटियां जब घर छोड़ जाती हैं,
सब खुषियाँ उस पार होती हैं ।
बेटियों को कोख में क्यों मारते?
बेटियों से दुनिया होती हैं।
बेटे घर का दीप हैं माना,
बेटियाँ अरदास होती हैं।

प्रसिद्ध जैन कवि 'जैनी' की पंक्तियाँ यहाँ याद आती है–

मत करो भ्रूण हत्या भाई, ये पाप बड़ा ही दुखदाई
इक गुड़िया सी कन्या को, क्यों जग के आने सो रुकवाई।
कन्या ही से नारी बनती, बिन नारी कौन पुरुष आया
सारे जग की जननी ये है, क्यों जननी को ही ठुकराया
पगले अपराध भयानक है, कैसे तू करेगा भरपाई
इक गुड़िया सी कन्या को, क्यों जग के आने सो रुकवाई।
कन्या तो एक बगीचा है, जिसमें फल लगते गुणकारी
तीर्थंकर जन्मे नारी से, जिसको पूजे दुनिया सारी
भगवान की इस अनूठी कृति को, तुने जालिम क्यों मिटवाई
इक गुड़िया सी कन्या को, क्यों जग के आने सो रुकवाई।
ये गलत काम करके भैय्या, कन्यायें कहाँ से लावोगे।
किसको अपने बेटों की तुम, बहुरानी बनाकर लावोगे
बस बंद करो ये मनमानी, 'जैनी' की आँखें भर आई

इक गुड़िया सी कन्या को, क्यों जग के आने सो रुकवाई।

बेटे और बेटियों के इस अमानवीय भेद को करने का अधिकार हमें किसी ने नहीं दिया। बेटी में भी वही संवेदना है, अपितु उससे भी अधिक जो बेटे में है। फिर यह भेद क्यों, आवां कि सोनोग्राफिस्ट मिसेज बतरा शायद यही कहना चाहती है, नमिता से या शायद हम सभी सेकृ

कमाल है .... लड़के की खुशखबरी सुनकर रो रहीं आप? यहाँ तो मुश्किल यह है कि गर्भ में लड़की की सूचना पाते ही औरतें बुझ जाती हैं। कई मामलों में तो मैं उनके बार–बार टटोलने के बावजूद झूठ बोल देती हूँ कि बच्चा कमजोर है। बताना मुश्किल है कि लड़का है या लड़की। बेहतर होगा वे गर्भ गिरवाने का ख्याल मन से निकाल दें।[23]

कई बार मिसेज बतरा लड़की के होने पर भी झूठ बोल देती है कि लड़का होगा। उनको कई बार अपने इस मानवीय धर्म पर धमकियां मिल चुकी है परिणाम भुगतने की। यहाँ तक कि उन पर प्राणलेवा हमला भी हो चुका है–

.... शाम को नर्सिंग होम के गेट से निकलते हुए किसी ने पीठ पर चाकू फेंककर मारने की कोशिश की।[24]

हमारे दैनिक जीवन में इस प्रकार की घटनाएं आम हो चुकी हैं। आज भारत के सभी शहरों की गली–गली में जिंदा मानव के कत्लगाह खुले हुए हैं, जहाँ एक कन्या को स्वयं आमंत्रण देने वाला उसका पिता, दया, ममता, प्रेम, करूणा, स्नेह, वात्सलय का दंभ भरने वाली उसकी माँ कोमल अजन्मा के रक्त से नहाकर अपने आपको मुक्त अनुभव करते हैं। इस विषय पर मेरे शब्दों में–

आज सागर से जाकर कह दो
इठलाना छोड़ दे; अपनी राशि पर
हम बेहयाई में,
ओर आगे ....
ओर आगे .....
ओर आगे ...., बढ़ गए ।

ख)प्रजनन की समस्या

प्रजनन की समस्या मुख्यतः सुरक्षित प्रसव व माँ के स्वास्थ्य व जीवन से जुड़ी हुई है। जो कि नारी के जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटना है। इस समस्या पर सर्वाधिक ध्यान देने की महती आवश्यकता है। आज भारत दुनिया की तेजी से उभरता अर्थव्यवस्थाओं में एक है। यहाँ के मेट्रो शहरों में विकसित देशों की तरह चमचमाते मॉल और सड़कें है लेकिन असली भारत की हकीकत इससे अलग है। जहाँ न स्वास्थ्य सुविधाएं है और न शिक्षा। जहाँ आज भी हर पांच मिनट में एक माँ बच्चे को जन्म देते समय दम तोड़ देती है। 'सेंटर फॉर रिप्रोडक्टिव राइट्स' की एक रिपोर्ट भारत में नारी की प्रसव की समस्या की भयावहता को कुछ इस प्रकार आंकड़ों में उजागर करती हैं।

भारत में प्रसव के दौरान एक लाख जन्म पर 301 महिलाओं की मौत होती है। इस तरह करीब–करीब हर पांच मिनट में एक महिला की जान चली जाती है।[25]

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है और जो इस दर्पण को जितनी सफाई के साथ सामने लाता है, वह उतना ही बड़ा साहित्यकार माना जाता है। समाज में नारी जीवन से सम्बन्धित इन समस्याओं को भी चित्रा जी अपने साहित्य में उजागर करती है, जिनकी और कभी किसी साहित्यकार का ध्यान गया ही नहीं। इसी कारण आधुनिक उपन्यासकारों में चित्रा जी सर्वाधिक ख्याति प्राप्त, सम्मान प्राप्त लेखिका है।

उनके उपन्यासों में नारी की प्रसव सम्बन्धित समस्याओं पर भी दृष्टि डाली गई है। प्रसव के समय होने वाली नारी की मृत्यु के हिसाब से भारत आज भी बहुत पिछड़ा देश है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार अधिकांश मामलों में ऐसी मौतें रोकी जा सकती है। इसके लिए महिलाओं का निचले स्तर पर सशक्तीकरण किये जाने की आवश्यकता है क्योंकि देश में महिलाओं की ऐसी मौतों में 25 फीसदी दलित समुदाय से होती है। कानून विज्ञ मेलिसा उपरेती के शब्दों में–

यह भारत सरकार के लिए शर्म की बात है कि वह महिलाओं को जरूरी पोषण और स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराने में विफल रही है।[26]

ऐसा ही नहीं कि यह स्थिति गाँवों में या गरीब इलाकों में ही है। शहरों में भी स्थिति अधिक अच्छी नहीं है। आवां की डाक्टर बनजा की माँ भी इसी प्रकार जरूरी सुविधाओं के अभाव में मर गई थी। इस कसक को वह नमिता से व्यक्त करती हुई कहती है–

जानती हो यह पेशा मैंने क्यों अपनाया? क्यों निश्चय किया तुम्हारी जैसी ही एक लड़की ने कि वह डाक्टरी पढ़ेगी? उसमें से भी वह प्रसूति विशेषज्ञ बनेगी। क्योंकि मुझे जन्म देते हुए जचकी की असुविधाओं के चलते मेरी माँ मेरी आँखे खोलते ही चल बसीं ...[27]

'एक जमीन अपनी' में नीता को भी जिंदगी और मौत के बीच झूलती इस स्थिति में दिखाया गया है। शायद इसलिए नारी को द्विजा कहा जाता है।

शल्य–क्रिया कक्ष में अस्त–व्यस्त नीता को दो नर्सों ने संभाल रखा था।[28]

इतोपि–

सात बोतल ग्लूकोज चढ़ा चुके उसको, एक बोतल खून .... दूसरी चढ़ा रहे थे। अचानक इसकी हालत बिगड़ने लगी.....[29]

घोर पीड़ा नीता के लिए असहनीय है। वह स्वयं स्वीकार करती है।

"कुछ नहीं हो सकेगा .. चाहने भर से ... न मैं बचूंगी, न बच्चा ..."[30]

'आवां' की नायिका नमिता पांडे को भी गर्भपात की असहनीय वेदना से दो–चार होना पड़ता है। यह उसे असमय वज्रपात के समान जान पड़ा–

मुँह सूख रहा। जवान फेरी होंठों पर। गाड़ी में पानी कहाँ से आएगा? पेट का निचला हिस्सा लग रहा गड़ासी से खच्–खच् कटकर गिर रहा। उफ् क्या हो गया उसके

साथ .....[31]

औरत को प्रसव के बाद द्विजा कहा जाता है अर्थात् माँ के रूप में उसका दूसरा जन्म होता है। घोर यातना को सहकर वह सृष्टि सृजन का कार्य सम्पन्न करती है मगर पुरुष यह क्यों नहीं समझता? वह गर्भवती स्त्री को भी अपनी हवस का शिकार बनाने से नहीं छोड़ता। क्या वास्तव में नारी देह पुरुष के लिए उगलदान मात्र है?

उसी दोपहर की घटना है जिस रोज पांडेय जी अस्पताल में दाखिल हुए। किसी ग्राहक के संग अनीसा का झगड़ा हुआ। ग्राहक इच्छा के विरुद्ध जोर–जबरदस्ती उससे सम्भोग करना चाह रहा था। पेट में उसके सात महीने का बच्चा था। दारू पिए ग्राहक ने अनीसा के राजी न होने पर उसके पेट में इतने लातें लगाई कि उसका गर्भ गिर गया और उसका बच्चा पेट से बाहर निकल आया। अनीसा मूर्च्छित हो गई। चेत में न आने पर 'जागो री' की अन्य वेश्या सदस्यों ने मिलकर खून से लथपथ अनीसा को ले जाकर राजावाड़ी अस्पताल में भर्ती कराया। घंटे भर बाद डाक्टरों ने अनीसा को मृत घोषित कर दिया। बच्चा तो मरा हुआ पैदा ही हुआ था ......[32]

अत्याचार की पराकाष्ठा पर भी हमारा मौन क्या हमारे इंसान होने पर प्रश्नचिन्ह नहीं लगाता? इसीलिए लेखिका कहती है–

किरपू दुसाध मरा नहीं है। मरेगा भी नहीं। जब तक औरत अपने पेट को उसकी लातों के प्रहार से स्वयं को बचाना नहीं सीख जाती ....[33]

'एक जमीन अपनी' की अंकिता को भी गर्भपात के इस घिनौने दौर से गुजरना पड़ता है।[34]

एक और जहाँ प्रसव के दौरान स्त्री अपनी जीवन–मृत्यु की जंग लड़ती है वही हमारे समाज में भगवान का दर्जा पाने वाले भगवानों के लिए वह पैसा कमाने का साधन मात्र होती है। कितने संवेदनाशून्य समाज में जीने को बाध्य हैं हम। चित्रा जी समाज की, डाक्टरी के पैसे की हकीकत को भी उजागर करती है।

केस को जानबूझकर सीजरियन बना, पैसा झारने वालों में डॉ0 यास्मीन नहीं।[35]

नीलम्मा की यह छोटी सी टिप्पणी डाक्टरी के पवित्र समझे जाने वाले पेशे पर कितना बड़ा प्रश्न चिन्ह लगाती है? डॉ0 चन्द्रिका ठाकुर के शब्दों में–

विश्वास लुट रहा है, आस्था बेपनाह हो गई है ।
मांग ही मांग सब कुओं में, इंसानियत सो गई है।।

मगर आज की स्त्री इतनी कमजोर नहीं है। वह अत्यचारियों के समक्ष आत्मसमर्पण नहीं कर सकती, वह संघर्ष चुनती है। चित्रा जी की शायद यही सबसे बड़ी विशेषता है। चित्रा जी के उपन्यासों की समीक्षा में प्रसिद्ध आलोचक अरविन्द जैन भी इस तथ्य को रेखांकित करते हैं।

भयंकर रक्तपात (हत्या–आत्महत्या–बलात्कार) और गर्भपात के बावजूद स्त्री आत्मसमर्पण की अपेक्षा संघर्ष के सपनों और संकल्पों को संगठित करने का विकल्प चुनती–बुनती है, बुनेगी।[36]

ग) बांझपन की समस्या

हमारे धर्म शास्त्रों में स्त्री का अतिशय महत्त्व इसलिए है क्योंकि वह संतान की जननी है। सन्तान के जीवन–विकास में माता–पिता का सर्वाधिक योगदान एवं प्रभाव होता है। माता के महत्त्व पर आचार्य वसिश्ठ ने लिखा है–

उपाध्यायादृशाचार्यः आचार्याणां शतं पिता।
पितुर्दशशतं माता गौरवेणातिरिस्थ्यते।।[37]

अर्थात् आचार्य का गौरव दस उपाध्यायों से अधिक है, पिता सौ आचार्यों से अधिक गौरवशाली है और माता एक हजार पिताओं से भी अधिक प्रतिभाशाली है। परन्तु वर्तमान में नारी इस गौरवपूर्ण स्थान को प्राप्त करने में अक्षम होती जा रही है। भारतीय स्त्रियों में बांझपन का खतरा बढ़ता जा रहा है। सन् 2010 में प्रकाशित एक रिपोर्ट के अनुसार पांच में से एक दंपत्ति निःसन्तान है और ऐसे जोड़ों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। षहरों की 16ः विवाहित महिलाएं निःसन्तान है। रिपोर्ट का सबसे भयावह पहलू यह है कि भारत में संतानहीनता के मामलों में सन् 1931 के बाद 50ः की बढ़ोत्तरी दर्ज की गई है।[38]

चित्रा जी ने नारी की इस समस्या को अपने उपन्यासों में प्रमुखता से तो नहीं उठाया परन्तु गौण रूप से अवश्य इस ओर इशारा किया है। 'गिलिगडु' में मिसेज श्रीवास्तव बांझपन का शिकार है। वे स्पष्ट शब्दों में इस तथ्य को स्वीकार करती है–

हमें इस बात का कोई गम नहीं कि हमारी कोई अपनी औलाद नहीं मिसेज श्रीवास्तव का गला भर्रा आया।[39]

उपन्यास 'आवां' में भी चित्रा जी ने नारी की इस समस्या पर अपेक्षाकृत अधिक विस्तार से प्रकाश डाला है। निर्मला कनोई जी संतान उत्पन्न करने में सक्षम नहीं है। यह एक प्राकृतिक समस्या है जो कि किसी भी नारी के साथ हो सकती है। इस समस्या से वर्तमान में बहुत सी स्त्रियां ग्रस्त हैं। निर्मला की असमर्थता के कारण संजय के साथ टकराव उनका हो गया है। जैसा कि हमारे समाज में पग–पग पर देखने को मिलता है। माना जाता है कि सन्तान से दाम्पत्य संबंधों में मजबूती आती है और सन्तानहीनता अक्सर अलगाव या परित्याग का कारण बन जाती है।

हो सकता है, उनके कोई बच्चा हो गया होता तो शायद परस्पर संबंधों में ऐसी ऊबन–टूटन न व्यापती।[40]

नमिता इस समस्या के सन्दर्भ में संजय जी से बात करते हुए प्रश्न भी करती है?

बच्चा पैदा न कर पाने की असमर्थता किसी के साथ भी हो सकती है। क्यों नाराज है आप उनसे? मान लीजिए आप नपुंसक होते, तब?[41]

निर्मला जी अपनी इस समस्या के निदानार्थ एवं अपनी माँ बनने की संभावना तलाशने

डाक्टर की शरण में भी जाती है।

अपने माँ बनने की संभावना तलाश करने वैज्ञानिक संस्थान सी0सी0एम0बी0–सेंटर फॉर सेल्यूलर अंड मालेक्यूलर बायलॉजी, के उप निदेशक डा0 पी0डी0 गुप्ता से भेंट करने। 'इंडियन एक्सप्रेस' में उसने डा0 पी0डी0 गुप्ता का एक लेख पढा था। 'एक्सड्राउटेरीन प्रेगनेसीज' या 'एक्टोपिक प्रेगनेंसीज' यानी गर्भाशय से बाहर की जाने वाली गर्भ धारणा।[42]

आज शहरी दंपतियों को इस प्रकार के इलाज के लिए क्लीनिकों में जाने को मजबूर होना पड़ रहा है। सन् 1978 से 2010 तक इन विट्रो फर्टिलाइजेषन (टेस्ट टयूब) और दूसरी तकनीकों के जरिए दुनिया भर में 40 लाख से अधिक बच्चे पैदा हो चुके हैं और अभी ऐसे कई बच्चे गर्भ में हैं।[43] परन्तु निर्मला कनोई इस इलाज से तौबा कर लेती है क्योंकि उनके लिए पिता का व्यवसाय अधिक महत्त्वपूर्ण है।

आत्म–अनुरक्त निर्मला ने घोषणा कर दी– उसके बूते का नहीं अपनी जान जोखिम में डालकर कनोई खानदान का वारिस पैदा करना।[44]

लेखिका ने इसी समस्या को मिसेज छेडा के माध्यम से भी प्रस्तुत किया है। मिसेज छेडा भी निर्मला जी की तरह ही एक उच्च वर्गीय सम्पन्न महिला है। परन्तु वे अपने पति को संतान सुख देने में असमर्थ है। अंततः छेडा साहब गौतमी को अपनी संतान पैदा करने के लिए चुनते हैं।

"जूठी कोख है गौतमी। जिस ठाठ–बाट से वह जी रही है केवल प्रतिभा के बूते वहाँ तक पहुंचने में उसे बीस साल लग जाते। जिस आलीषान फ्लैट में रह रही वह जानती हो किसका भेंट किया हुआ? नामी–गिरामी उद्योगपति छेड़ा साहब का। जापान में उसके संग डेढ साल रही गौतमी। छेड़ा साहब की पत्नी मुम्बई लौटी तो अपनी सूनी गोद में बेटा लेकर। व्यवसायी समाज में उन्होंने झूठ उड़ा रखा था कि मिसेज छेड़ा गर्भवती है दुनिया का कोई इलाज मिसेज छेड़ा को माँ नहीं बना सकता था।"[45]

संजय कनोई भी नमिता को अपने बच्चे की माँ बनाने के इरादे से ही पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार अपने जाल में फंसाते हैं। वे स्वयं नमिता से कहते हैं।

मैं रंडियो से बाप नहीं बनना चाहता था, जिनके लिए बच्चे पैदा करना महज सौदा भर हो और जो अनेकों से सौदा कर चुकी हो– मुझे नहीं गंवारा थी ऐसी किराये की कोख। मुझे सिर्फ उस लड़की से औलाद चाहिए थी जो पेशेवर न हो ..... पवित्र हो, जो मुझसे प्रेम कर सके। सिर्फ मेरे लिए माँ बने, सिर्फ मुझसे सहवास करे ..... हमारा मिशन सफल रहा ...."[46]

आज हमारे समाज में इस प्रकार की व्यवस्था निरंतर फैलती जा रही है। इस समस्त क्रिया–व्यवहार को हमारे समाज में मौन स्वीकृति मिल गई है। ऐसी माँ जो अपनी कोख किराए पर देती है उसे 'सैरोगेट मदर' कहा जाता है। इस पर कुछ फिल्मों का निर्माण भी हो चुका है। अब हमारी संसद इसे कानूनी मान्यता भी देने जा रही है।[47]

नारी की प्रजनन सम्बन्धी सबसे बड़ी समस्या पर अगर विचार किया जाए तो वह

कन्या भ्रूण हत्या ही मानी जाती है। भारत सरकार ने इस समस्या के निदानार्थ अनेक योजनाएं भी चलायी है। चित्रा जी ने इस समस्या को अपने उपन्यासों में उठाकर निश्चय ही अपनी महानता का परिचय दिया है क्योंकि एक भ्रूण का, निरपराध का जिसने अभी जन्म भी नहीं लिया केवल इसलिए गर्भ में ही कत्ल करवा देना कि वह एक कन्या है, निश्चय ही नर दानवों का ही कार्य है। डॉ0 ईश्वर चन्द्र गंभीर के शब्दों में अगर कहे तो–

प्यार और ममता की चदरिया तार कर,
फर्ज और कर्त्तव्य से यूँ हार कर ।
नर्क के द्वार न अपने खोलिए,
क्या मिलेगा बेटियों को मार कर?

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. *भारतीय संस्कृति में नारी* – डॉ0 लता सिंहल, परिमल पब्लिकेशन्स, दिल्ली, सं0 प्रथम सन् 1999।
2. ऋग्वेद, 10, 102, 2–11
3. ऋग्वेद, 9.98.11
4. ऋग्वेद, 3, 31, 1–2
5. ऋग्वेद, 6.75
6. बाल्मीकि रामायण 2, 25, 5–6
7. निरुक्त, 3.4.4 (दुर्गाचार्य)
8. *भारतीय संस्कृति में नारी,* पूर्वोक्त, पृ0 **10**
9. ऐतरेय ब्राह्मण, 3.3.1
10. ऐतरेय ब्राह्मण , 7, 13
11. गौतम धर्म सूत्र, 3.3.9
12. *गिलिगडु,* सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 **127**
13. गिलिगडु, पृ0 **127**
14. *आवां,* सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 **499**
15. *आवा,* पृ0 **373**
16. इंडिया टुडे, दिसम्बर 2011 पृ0 **56**, आवरण कथा
17. आवां, पृ0 **500–501**
18. भारत की जनगणना, 2001, आंकड़े प्रकाशित, दैनिक जागरण, सं0 मेरठ, 16 मई, 2009
19. भारतीय स्त्रीः लिंग अनुपात एवं सशक्तीकरण, कृपा गौतम, मित्रा पब्लिशर एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर, दिल्ली, सं0 2010, पृ0 **70**
20. 'वुमेन लिव' से 'स्त्री विमर्श' दृष्टि भ्रान्ति का शिकार, सुधा अरोड़ा, साहिती सारिका, अंक

जुलाई, सितम्बर 2008, पृ0 **54**

21. *स्त्री के उत्पीड़ित से उत्पीड़क होने की कथा–* डॉ0 बी0 सुधा, समकालीन हिन्दी उपन्यासः समय और संवेदना, सं0 प्रथम, पृ0 **108**
22. *आवां*, पृ0 **324**
23. *आवां,* पृ0 **502**
24. *आवां*, पृ0 **502**
25. *भयावह तस्वीर,* अमर उजाला, सं0 मेरठ, 2 अगस्त 2009, पृ0 **2**
26. वही
27. *आवां*, पृ0 **501**
28. *एक जमीन अपनी*, सामयिक प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 **209**
29. *एक जमीन अपनी*, पृ0 **211**
30. *एक जमीन अपनी,* पृ0 **210**
31. *आवां*, पृ0 **531**
32. *आवां*, पृ0 **353**
33. *आवां*, पृ0 **540**
34. *एक जमीन अपनी,* पृ0 **24**
35. *आवां*, पृ0 **531**
36. *स्त्री के निजी सत्यों की सार्वजनिक पटकथा,* अरविन्द जैन, समय माजरा, सं0 2000, पृ0 **56**
37. *वशिष्ठ धर्म सूत्र,* 13, 48
38. इंडिया टुडे, बांझपन फैलता शिकंजा, आवरण कथा, 7 जुलाई, 2010
39. *गिलिगडु–* पृ0 **138**
40. *आवां*, पृ0 **273**